03.10.2020

B.A. Part-II
Economics (Hons.)
Paper-III (Indian Economy)

Prof (Dr.) Bipin Kumar
Prof. In-charge
R.R.S. College, Mokama
PPU, Patna

Topic: "Sugar Industry"

Topic: Discuss Present position and Problems of Sugar Industry in India

Ans: भारत में चीनी उद्योग का विकास प्रथम महायुद्ध से शुरू हुआ — युद्धकाल के दौरान चीनी उद्योग को प्रोत्साहन मिला किन्तु यह प्रोत्साहन स्थायी नहीं रहा। युद्ध के बाद उद्योग को पुनः विदेशी प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा। विश्व में चीनी का उत्पादन इतना अधिक बढ़ गया कि भारतीय बाजारों में विदेशी चीनी सस्ते दर पर मिल जाती थी। भारत सरकार ने इस स्थिति से उबरने के लिए चीनी के आयात पर कर लगाया गया। बावजूद इसके विदेशी चीनी हमारे देश में कम मूल्य पर उपलब्ध थी। अब हम चीनी उद्योग के विकास की चर्चा करेंगे।

वर्तमान समय में हमारे देश में चीनी उद्योग संगठित उद्योगों में से एक महत्वपूर्ण उद्योग। आज पूरी दुनिया में गन्ना का उत्पादन करनेवाले देशों में पहला स्थान एवं चीनी उत्पादन करनेवाले देशों में दूसरे स्थान पर है। हालांकि भारत गन्ने से गुड़ एवं खाण्डसारी बहुत पुराने समय से बनाता व निर्यात करता रहा है — लेकिन आधुनिक ढंग से चीनी का उत्पादन तो भारत में 20वीं शताब्दी की देन है। देश की आबादी में काफी वृद्धि होती गयी एवं उसी अनुपात में चीनी की माँग भी देश में लगातार बढ़ती रही। अतः वर्ष 1942 में चीनी का मूल्य नियंत्रण एवं राशनिंग कर दिया गया एवं इसे वर्ष 1947 में समाप्त कर दिया गया। देश के विभाजन का इस उद्योग पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, जिससे 67 प्रतिशत चीनी मीलें भारत में ही रह गयीं तथा अधिकांश गन्ना उत्पादन क्षेत्र भारत के हिस्से में आये।

अब हम योजना काल में चीनी उद्योग के विकास की बात करेंगे। योजना काल में चीनी उद्योग के विकास हेतु दो प्रमुख बातों पर ध्यान दिया गया, एक तो मिलों का कुल उत्पादन बढ़े, जिससे देश के उपभोक्ताओं को पर्याप्त मात्रा में चीनी उपलब्ध हो सके। वहीं दूसरी ओर नये-नये चीनी मील खोले जायें जिससे उत्पादन को बढ़ाकर कुल चीनी का निर्यात कर सकें एवं दुर्लभ विदेशी मुद्रा को बचाया जा सके। इस काल में चीनी मिलों की संख्या बढ़ी है, उनका उत्पादन बढ़ा है, मिलों की कुल क्षमता में वृद्धि हुई है। चीनी के निर्यात में भी स्थान प्राप्त कर लिया है। पिछले कई दशकों से चीनी का उत्पादन बराबर बढ़ता रहा था -- परन्तु बाद में इसमें गिरावट आ गई थी, इसके कारण गन्ने का उत्पादन कम हो जाना था। वर्ष 2004-05 में चीनी का रिकार्ड उत्पादन 123.52 लाख टन था। "चीनी उत्पादकता में महाराष्ट्र का प्रतिशत 33% और उत्तर प्रदेश का 30% है। तमिलनाडु और कर्नाटक भी उत्पादन की दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य हैं।" वर्तमान समय में चीनी के 571 से अधिक मिलें हैं जिनमें से अधिक-से-अधिक सहकारी क्षेत्र में हैं। देश में सहकारी क्षेत्र चीनी के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत उत्पादन करते हैं। शेष 40 प्रतिशत उत्पादन निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र से होता है। इस उद्योग

में लगभग 2,0 ... करोड़ रु० से अधिक की पूंजी लगी हुई है और इससे लगभग तीन लाख श्रमिकों को इस क्षेत्र में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मिला हुआ है।

अब हम सरकार के चीनी उद्योग के प्रमुख नीतियों की चर्चा करेंगे।

(i) देश के गरीब लोगों को चीनी उचित मूल्य पर मिलता रहे इसके लिए आंशिक नियंत्रण नीति को सरकार ने 2002-03 में समाप्त कर दिया।

(ii) गन्ना उत्पादक किसानों को गन्ना की उचित मूल्य मिल सके इसके लिए प्रतिवर्ष सरकार गन्ने की मूल्य घोषित करे।

(iii) इस उद्योग को सरकार अपने नियंत्रण में लेने का कोई इरादा नहीं रख

(iv) सरकार इकाईयों की स्थापना में सहकारी इकाईयों को प्राथमिकता देने की नीति को प्राथमिकता देती है।

अब हम देश के चीनी उद्योगों की प्रमुख समस्याओं एवं उनके समाधान की चर्चा करेंगे।

(1) कच्चे माल की समस्या : हमारे देश में चीनी उद्योग के सामने गन्ने के अभाव की घोर समस्या है। यह समस्या मुख्यतः उत्तर प्रदेश एवं बिहार की समस्या है। इन राज्यों में कोई चीनी मिलों की दूरी काफी कम (निकट) है। इस कारण इन मीलों को गन्ने के लिए प्रतियोगिता करना पड़ता है। इन प्रतियोगिताओं के कारण गन्ने का मूल्य बढ़ जाता है।

(ii) इसका दूसरा प्रभाव यह पड़ता है कि किसान अपना गन्ना चीनी मीलों को न बेचकर स्वयं ही गुड़ बनाने का काम करते हैं कारण कि गुड़ बनाना किसानों के लिए अधिक लाभदायक सिद्ध हो रहा है।

(2) गन्ने में अपेक्षाकृत कम चीनी का होना : हमारे देश में गन्नों की किस्म के कारण अपेक्षाकृत कम चीनी उत्पादित होती है। इसके साथ ही हमारे देश में प्रति एकड़ कम उपज होती है एवं कम चीनी की मात्रा का उत्पादन होता है।

(3) चीनी का मूल्य अधिक होना : हमारे देश में चीनी का उत्पादन व्यय अधिक होने के कारण चीनी का मूल्य अधिक हो जाता है।

(4) गौण पदार्थों के समुचित उपयोग की कमी : हमारे देश में चीनी मीलों से प्राप्त गौण पदार्थों के समुचित उपयोग की व्यवस्था नहीं है। चीनी मीलों के गौण पदार्थ मुख्यतया गन्ने की सिट्ठी या खोया है-- इससे कागज तथा अल्कोहल बनाया जा सकता है। कुछ मीलें हैं लेकिन वह पर्याप्त मात्रा में नहीं है, जिसके कारण इसका समुचित उपयोग नहीं हो पाता है।

(5) आधुनिकीकरण की समस्या : हमारे में स्थित अधिकांश चीनी मीलें काफी पुरानी हैं-- इनके मशीन और मशीनें काफी पुरानी हो चुकी हैं। इस कारण इनकी उत्पादन क्षमता घट गयी है और उत्पादन व्यय बढ़ गया है फलस्वरूप चीनी की कीमतें बढ़ रही हैं। इस प्रकार, चीनी मीलों के सामने आधुनिकीकरण की गंभीर समस्या है।